/font>

16.23 hrs.

Title: Further discussion on the motion of Thanks on the President's Address moved by Shri Vijay Kumar Malhotra and seconded by Shri Suresh Prabhu on 24.02.2003. (Concluded)

(Mr. Speaker *in the Chair*)

MR. SPEAKER: Now, we can take up Motion of Thanks on President's Address. Hon. Prime Minister.

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, मुझे खेद है कि जब माननीय राट्रपति जी के अभिभााण पर चर्चा हो रही थी, मैं सदन में उपस्थित नहीं था। मुझे गुट-निरपेक्ष आंदोलन में भाग लेने के लिए क्वालालामपुर जाना था। लेकिन मैंने जहां तक संभव है माननीय सदस्यों के भााणों को पढ़ने का प्रयास किया है। कुल मिलाकर चर्चा अच्छी हुई। प्रारम्भ में एक सवाल को लेकर टीका-टिप्पणी हुई कि अभिभााण बहुत लम्बा था। श्री सोमनाथ जी ने कहा कि केवल लम्बा ही नहीं, डैप्थ भी नहीं थी।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : लम्बा था, गहराई नहीं थी।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप राट्रपति महोदय के अभिभााण में गहराई कब से ढूंढने लगे?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE: This is the 'Vajpayee formula', not to answer any question!

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं इससे सहमत नहीं हूं। अभिभााण अच्छा है और अधिकाधिक वियों का समावेश करता है। कठोर परिश्रम के लिए देश का आह्वान करता है, जिससे कि विकास की दर को बढ़ाने का जो हमारा लक्ष्य है, वह पूरा हो सके। मैं पूर्व राट्रपतियों द्वारा दिए गए पुराने भााणों को देख रहा था, जो वर्तमान अभिभााण से भी लम्बे अभिभााण थे।

श्री सोमनाथ चटर्जी : ट्रांसलेशन नहीं था।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उन भााणों को सुनने वाला मैं भी एक था। लेकिन मैं सहमत हूं कि सभी बातों का समावेश होना चाहिए, लेकिन संक्षेप में होना चाहिए और फिर किसी राज्य सभा के अध्यक्ष यानि उपराट्रपति महोदय के सामने कोई कठिनाई पैदा नहीं होनी चाहिए। जो विाय उठाए गए हैं, मैं एक-एक का उत्तर देने का प्रयास करूंगा, सभी मुद्दों का उत्तर देना शायद संभव नहीं होगा।

देश में सूखा क्षेत्रों के बारे में बड़ी चिन्ता प्रकट की गई है। चिन्ता स्वाभाविक है। 14 राज्य सूखे से पीड़ित हैं और पीने के पानी की कमी हुई है। जानवरों के लिए चारे का अभाव रहा है। कई स्थानों पर लोगों को अपने घरों को छोड़कर रोजगार की तालाश में बाहर जाना पड़ा है। लेकिन फिर भी यह बात स्वीकार की जानी चाहिए कि हमने इतने बड़े सूखे से उत्पन्न संकट पर नियन्त्रण प्राप्त करने में सफलता पाई है। कीमतें नहीं बढ़ी हैं। लोगों को अनाज पहुंचाने का पूरा प्रयत्न हुआ है। इसके लिए अन्त्योदय योजना का आश्रय लिया गया है। अब स्थिति यह है कि गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले लगभग छः करोड़ परिवारों में से अर्थात् 1.5 करोड़ परिवारों को अन्त्योदय योजना के अन्तर्गत लाभान्वित करने का संकल्प लिया है। इस योजना के अन्तर्गत प्रति परिवार को 25 किलोग्राम प्रतिमाह की जगह 35 किलोग्राम प्रतिमाह दिए जाने के आदेश एक अप्रैल से दे दिए गए हैं। इसकी घोाणा वित्त मंत्री जी ने अपने भााण में की थी।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : साढ़े चार करोड़ परिवारों को क्यों छोड़ दिया?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मुझे यह बोलना आसान है।

सोनिया जी ने एक प्रश्न उठाया है। मैं चाहूंगा कि सदन उस पर गम्भीरता से विचार करे। जो परिवार में नहीं हैं और जिन के पास आजीविका के कोई साधन नहीं हैं, वे बिखरे हुए हैं, बंटे हुए हैं, रोजगार मिलता नहीं है, मिलता है तो उस रोजगार को करने की स्थिति में नहीं हैं, उनका पेट किस तरह से भरा जाए? जब हम मन की सिक्योरिटी की बात करते हैं तो उनका भी विचार होना चाहिए। मैं इस सम्बन्ध में सभी दलों के नेताओं से विचार-विनिमय करना चाहूंगा। हम ऐसा रास्ता निकालें कि हमारे पास जो अन्न का भंडार है, उसके होते हुए जब लोगों के भूखे रहने की नौबत आती है तो लगता है कि कहीं न कहीं हमारे प्रबन्ध में कमी है, लेकिन अगर कमी है तो शासन की इतनी कमी नहीं है, जितनी परिस्थिति के कारण है।

रोजगार का प्रश्न बड़े पैमाने पर उठाया गया। उससे पहले मैं एक बात को स्पट कर दूं। इस सरकार ने राज्यों को अनाज देने के मामले में किसी प्रकार का कभी भेदभाव नहीं किया, न करेंगी। यह मेरे लिए ईमानदारी का सवाल है। हम राजनीतिक आधार पर सूखा पीड़ितों को सहायता देने में भेदभाव नहीं कर सकते हैं। सरकार ऐसी नीति नहीं अपना सकती, न सरकार ने अपनायी है और ऐसी नीति अपनाना भी अमानुाकिता होगी। भूखे को भोजन चाहिए, सब का पेट भरे, हम इस तरह की व्यवस्था चाहते हैं, लेकिन आरोप लगते हैं।

राजस्थान की बात हुई है। श्रीमती सोनिया सांधी ने राजस्थान के बारे में मुझे पत्र भी लिखा था। मैंने उनको उत्तर दिया। मेरे पास कुछ आंकड़े हैं। मैं वे सदन के सामने प्रस्तुत करना चाहता हूं। राजस्थान को 29 लाख टन अनाज आवंटित किया गया जो सबसे अधिक है तथा यह सभी प्रदेशों के लिए आवंटित कुल अनाज का 44 प्रतिशत है, लेकिन हमने राजस्थान के ऊपर कोई एहसान नहीं किया। वहां परिस्थिति ऐसी है। सबसे भयंकर परिस्थिति शायद अगर किसी प्रदेश में होगी तो वह राजस्थान में है, इसलिए बाकायदा सूखे के खिलाफ कदम उठाने के पहले जब मैं राजस्थान गया था तो मैंने 50 करोड़ रुपए की सहायता का ऐलान किया था। लोगों ने कहा अभी सूखा है नहीं, सूखा घोाित नहीं हुआ है, आपने राजस्थान की मदद क्यों की? मैंने कहा कि मुझे लगता है कि यहां आसार बुरे हैं और आगे जाकर गम्भीर परिस्थिति होने वाली है। अगर तुलना करें तो 1987 के सूखे की तुलना में इस बार लगभग तिगुनी राहत सहायता पहुंचायी गई है। सूखा भी उससे ज्यादा है, इसमें कोई संदेह नहीं है। यह आरोप ठीक नहीं है कि अनाज आवंटित करने में देरी हुई है। हमारा प्रयास यह होता है कि जो पहली किश्त हम देते हैं, वह पूरी खत्म हो जाए या खत्म होने लगे और दूसरे की आवश्यकता हो जाए, मांग बढ़ने लगे तो दूसरी किश्त देनी चाहिए। पहली खेप पूरी तरह इस्तेमाल किए जाने से पहले ही दूसरा प्रस्ताव राजस्थान से आ गया। पहली खेप खत्म होने से पहले ही दूसरी खेप भेज दी गई। मजदूरी का खाद्यान्न घटक कम नहीं हुआ है। कुछ आंकड़े उपस्थित किए गए थे। सम्पूर्ण रोजगार योजना के अन्तर्गत प्रतिदिने पांच किलो खाद्यान्न देने की बात है।

परन्तु राजस्थान के अत्यधिक सूखाग्रस्त इलाकों में इसे 8 किलो कर दिया गया है जबकि अन्य खंडों में 6 किलो है। यह फर्क किया है, शायद इसके कारण कोई भ्रम पैदा होता हो, वह अब दूर होना चाहिये। इसका मापदंड यही है जो प्रदेश सरकार ने अपने स्पैशल पैकेज में मांगा था। अन्न देने के मामले में किसी प्रदेश सरकार से भेदभाव करें जबकि हमारे पास अन्न के भंडार भरे हुये हैं, मैं समझता हूं कि यह आलोचना भी देश की प्रतिठा को बढ़ाती नहीं है। सच्चाई तो यह है कि अन्त्योदय

योजना दुनिया का सब से व्यापक खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम है।

अध्यक्ष महोदय, सोनिया जी ने फूड सिक्यूरिटी की बात कही थी और उसमें एक प्रश्न पैदा हुआ जिसे मैंने सदन में उपस्थित किया है, उसका उत्तर हमें ढूंढना पड़ेगा। दक्षिण में ऐसे मठ हैं जहां कोई भी जाकर भोजन कर सकता है। वे मठ सरकार के पैसे से नहीं, समाज के सहयोग से 24 घंटे काम करे हैं। यह उनकी परम्परा है और वे उसे निभा रहे हैं। समाज में जब तक इस तरह का जागरण नहीं होगा कि पड़ोस में कहीं कोई भूखा तो नहीं सो रहा, तब तक भूख का पूरी तरह निर्मूलन करना एक कठिन बात होगी।

श्री रामदास आठवले (पंढरपुर) : आप कानून बनाइये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले एक चौथाई परिवारों को जो अनाज मिलेगा, वह 2 रुपये किलो गेहूं और 3 रुपये किलो चावल के आधार पर मुहैया कराया जायेगा। मैं वही सवाल फिर दोहराना नहीं चाहूंगा कि जिनके पास 2 रुपये किलो गेहूं और 3 रुपये किलो चावल खरीदने के लिये पैसा नहीं है, उनका क्या किया जाये? बड़े पैमाने पर काम शुरु किये गये हैं, राज्य सरकारों ने किये हैं।

'काम के बदले अनाज' इस योजना के अंतर्गत कई जगह अच्छे काम हुये हैं। मैं आन्ध्र प्रदेश का उल्लेख करना चाहूंगा। इसलिये नहीं कि वे हमारे गठबंधन में हैं। वह गठबंधन केवल बी.जे.पी. का गठबंधन नहीं है। सोनिया जी जब हमारा वर्णन करती हैं तो कहती हैं : 'BJP-led Government'

कई माननीय सदस्य : यह सही है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सही तो है मगर जो और दल हैं, उन्हें इस तरह से अप्रतिठत करके हम से अलग करना चाहते हैं। यह जितने सरल ढंग से कह दिया गया, उतना सरल मामला नहीं है। 'BJP led Government'-यह मिली-जुली सरकार है, सफलता के साथ चल रही है, अपना समय पूरा कर रही है।â€¦ (व्यवधान)मैं समझता हूं कि अनाज के मामले में...

SHRI S. JAIPAL REDDY (MIRYALGUDA): Sir, I would like to submit, with all the emphasis at my command, that his impression about the work done in Andhra Pradesh is absolutely incorrect and unfounded.

SHRI K. YERRANNAIDU (SRIKAKULAM): You please go and see the works that have been executed in the State of Andhra Pradesh...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Shri Yerrannaidu, I have not permitted you to speak.

...(*Interruptions*)

SHRI K. YERRANNAIDU : The Chief Ministers of even Congress ruled States had sent teams to the State of Andhra Pradesh to see the works done. It has come in the newspapers also.

MR. SPEAKER: Please sit down. You had your turn.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, हमारे मित्र की आन्ध्र प्रदेश की सरकार के बारे में राय अलग है, इसके बारे में मुझे कोई आश्चर्य नहीं है। अगर वे इस विष ाय में बोलते नहीं, यह बात उनके खिलाफ जाती। ' काम के बदले अनाज' कार्यक्रमों के लिये सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना के अंतर्गत 8000 करोड़ रुपये का अनाज राज्यों को मुफ्त आंबटित किया गया है। इसके अलावा लगभग 5000 करोड़ रुपये की नकद सहायता भी दी गई है। सूखे से जो परिस्थिति उत्पन्न हुई है, उसका हम सामना कर रहे हैं। सुझाव आमंत्रित हैं।

अंत्योदय योजना को सफल बनाने की जिम्मेदारी जन-प्रतिनिधियों की भी है। संसद सदस्य अपने क्षेत्र में अगर कभी घूमकर एक नज़र डाल लिया करें कि किस तरह से इस योजना का कार्यान्वयन हो रहा है तो मैं समझता हूँ कि इससे बड़ा लाभ होगा।

अध्यक्ष महोदय, देश की अर्थव्यवस्था बजट के साथ और समीक्षा के रूप में सामने आ गई है। कुछ अच्छे पहलू हैं जिनको ओझल नहीं किया जा सकता। विकास की दर घटी है। यह चिन्ता का विाय है और हम 8 फीसदी तक विकास की दर ले जाना चाहते हैं यह हमारा संकल्प है। लेकिन दो साल के सूखे के कारण कृाि के क्षेत्र में घाटा हुआ है जिसका कुल मिलाकर राट्रीय आमदनी पर असर पड़ा है। फिर भी कुछ अच्छे चिह्न हैं। विदेशी मुद्रा 75 बिलियन डॉलर हो गई है, 1 मार्च की इकोनॉमी मैगज़ीन के अनुसार अमेरिका, रूस, फ्रांस और जर्मनी के विदेशी मुद्रा भंडार से भी ज्यादा है। इस साल 25 बिलियन डॉलर की वृद्धि हुई है जो लगभग उतनी है जितनी 1998 में हमारा कुल विदेशी मुद्रा भंडार था। स्थिति अच्छी है इसलिए जो कर्ज़ा हमने लिया था, जो हमें बाद में वापस करना था, उसमें से कुछ हम अभी से वापस कर रहे हैं, पहले ही वापस कर रहे हैं। यह बताता है कि देश की स्थिति, देश का वातावरण इनवैस्टमेंट के लिए, पूंजी लगाने के लिए उपयुक्त है। विदेशी इसको स्वीकार कर रहे हैं। अंतर्राट्रीय पूंजी संगठन भी इस बात को मान रहे हैं। â€¦ (व्यवधान)इस समय जब यह कहा जाता है कि पूंजी लगाने में लोग उत्साहित नहीं होंगे क्योंकि पाकिस्तान के साथ हमारा तनाव है और इसके कारण पैसा लगाने में लोग हिचकेंगे, मेरा निवेदन है कि इस तरह की कोई कठिनाई अभी तक सरकार के सामने उपस्थित नहीं हुई है।

हमारे पास एटमी हथियार हैं, लेकिन हम एक उत्तरदायी राट्र हैं, रिस्पॉन्सिबल पावर हैं, यह सारी दुनिया मानती है। किसी ने भारत के बारे में प्रश्न नहीं उठाए हैं। प्रश्न जो उठे हैं, वे पड़ोसी के बारे में उठ रहे हैं, लेकिन उसका उल्लेख करके यह कहा जाए कि यह ठीक नहीं है - तनाव हमने तो पैदा नहीं किया! अब अगर पाकिस्तान से अमेरिका बातें नहीं मनवा सकता तो अमेरिका की दुर्बलता प्रकट होती है। अगर हमें दिये गये आश्वासनों का पालन नहीं हो सका तो भविय के लिए अपनी नीति का निर्धारण करते हुए हम इस तथ्य को ध्यान में रखेंगे। लेकिन यह सोचना कि हम किसी पर विश्वास न करें! हम लड़ाई टालने के हर विकल्प को अपनाने की कोशिश करते रहे हैं लेकिन जब अतिरेक हो गया था, जब सदन पर हमला हुआ और ऐसा लगा कि देश को इसका प्रतिकार करना पड़ेगा, उस समय अंतर्राट्रीय दबाव पाकिस्तान पर पड़ा। हमें भी आश्वासन दिये गये। पाकिस्तान से भी इस तरह से वक्तव्य आए जिनसे लगा कि वह आतंकवाद पर अंकुश लगाएगा और आर-पार जो आतंकवाद चल रहा है, उसको रोकेगा। वहां से जो तस्वीर आई, वह मिली-जुली तस्वीर थी। कभी ऐसा लगता था कि आतंकवाद की घटनाएं कम हो रही हैं।

कभी ऐसा लगता था कि आतंकवादी घटनाएं बढ़ रही हैं। इसलिए हम सावधान की मुद्रा में थे।

श्री अधीर चौधरी (बरहामपुर, पश्चिम बंगाल) : लेकिन आर-पार की लड़ाई नहीं हुई ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं इसका भी उत्तर दूंगा। मैंने कहा था कि अगर लड़ाई होगी, तो आर-पार की लड़ाई होगी और यदि बिना लड़े ही अपना उद्देश्य पूरा कर लिया, तो लड़ना जरूरी नहीं है।

हमने कूटनीतिक क्षेत्र में अपने विरोधियों को एक मात दी है। हमें विश्व का समर्थन मिला है, जो पर्याप्त नहीं है, लेकिन कुछ चिह्न अच्छे हैं और उनके भरोसे हमने आगे के लिए फैसले किए हैं। जब परिस्थितियों में जैसा परिवर्तन आएगा, उसके अनुसार हम काम करेंगे।

मैं, यह भी स्पट करना चाहता हूं कि गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन में जो चर्चा हुई, उसमें आतंकवाद के ऊपर अच्छी बहस हुई और आतंकवाद क्या है, कहां से शुरू हुआ है, इस पर बड़े अच्छे भााण हुए। हमारे देश में भी यह चर्चा का विाय बना हुआ है। हम से भी पूछा जाता है कि अगर अन्याय हो रहा हो, तो क्या आतंकवाद का सहारा लेना ठीक नहीं है ? हम कहते हैं कि आतंकवाद अपने में बुरा है इसलिए किसी काम में उसका सहारा लेना, उस काम को भी गलत बनाने वाला है।

डॉ. महाथिर ने जो भााण वहां दिया, मैं उसका एक अंश पढ़ना चाहता हूं-

> "Truly the world is in a terrible mess, a state that is worse than during the East West confrontation, the Cold War. All the great hopes following the end of the Cold War have vanished. And with the terrorists and the anti-terrorists fumbling blindly in their fight against each other, normalcy will not return for quite a long time.
>
> Surely, at some stage, we must ask ourselves why this is happening to the world. Why is there terrorism? Is it true that the Muslims are born terrorists? How do we explain the pogroms, the inquisitions and the holocaust which characterise Christian Europe for almost 2000 years?
>
> The Christians too were terrorised, not by Muslims but by fellow Christians who condemned them as heretics.
>
> So, it cannot be that Muslims are the sole cause of all these problems. If they are not, then is it a clash of civilisation, a clash of the Muslim civilisation against the Judea Christian civilisation that is responsible?
>
> Frankly, I do not think so. I think it is because of a revival of the old European trait of wanting to dominate the world. And the expression of this trait invariably involves injustice and oppression of people of other ethnic origins and colours."

क्वालालम्पुर में जो देश एकत्रित हुए थे वे आतंकवाद की समस्या से गमगीन और गम्भीर रूप से चिन्तित थे। उनका इतनी बड़ी संख्या में आना और ज्वलन्त प्रश्नों के हल ढूंढ़ने के प्रयास करना, इस बात का प्रमाण है कि विश्व युद्ध के कारण एक ध्रुवीय विश्व बनने जा रहा है। उसकी जगह और भी ध्रुव अस्तित्व में आएं, तैयार हों, इसके लिए गम्भीर प्रयास हो रहा है। मैं समझता हूं कि आतंकवाद इस सम्बन्ध में कसौटी है।

इराक के सम्बन्ध में वहां जो प्रस्ताव पारित किया गया है उसे आप देख सकते हैं। उसमें यह आशा व्यक्त की गई है कि इराक अपने सारे निश्चयों को कार्यान्वित करेगा।

फिर उस पर लगी हुई जो कठोरताएं और बाधाएं हैं, उन्हें हटा लिया जाएगा, लेकिन जो भी विदेशी मेहमान इस समय भारत आ रहा है, उससे मैं पूछता हूं कि क्या लड़ाई होगी, कोई नहीं कहता कि नहीं होगी। हमने देश को इसके लिए तैयार किया है और देश को तैयार रहना भी चाहिए, क्योंकि गल्फ और खाड़ी के साथ हम जुड़े हुए हैं और हमारे हित जुड़े हुए हैं। वहां 40 लाख के करीब लोग काम करते हैं। मैं चाहूंगा कि इस सवाल पर अलग से चर्चा हो और अगर गुटनिरपेक्ष आंदोलन के बारे में आप चर्चा करना चाहेंगे तो मुझे खुशी होगी।

अध्यक्ष महोदय, उस समय मैंने जो वक्तव्य दिया था, उसकी कापी मैं आपकी इजाजत से सभापटल पर रखना चाहता हूं। नेम में मेरा जो भााण था, उसकी प्रतिलिपि मैं सभापटल पर रख रहा हूं। इसके साथ जो प्रस्ताव पास हुआ है, उसकी भी प्रतिलिपि मैं सभापटल पर रख रहा हूं। क्वालालम्पुर जाने से पहले अनेक मित्रों से मेरा ि वचार-विनिमय हुआ था, लेकिन उस समय कोई मीटिंग औपचारिक ढंग से की जाती, इसकी आवश्यकता नहीं समझी गई। ये मामले नाजुक हैं और हमारी कुटनीतिज्ञता की परीक्षा ले रहे हैं। इस संबंध में सारे देश और सदन को एक होकर आगे बढ़ना होगा और इस संकट का, जो विश्व का संकट बन रहा है, सामना करने में अपना योगदान देना होगा।â€¦ (व्यवधान)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI (RAIGANJ): The Prime Minister gave an information. After the interaction, you are convinced that there is a possible attempt to attack Iraq and that the Indian people should be ready for any eventuality. The life of forty lakhs of Indians is at stake in the Gulf. Where do we stand if such a situation arises? Of course, we all stand together; there is no problem. But where do you stand? Where does the Government stand today?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: गवर्नमेंट अपना स्टैंड क्लियर कर चुकी है और फिर आवश्यकता होगी तो हम आपको सलाह-मशविरे के लिए बुला सकते हैं, बातचीत कर सकते हैं। मगर हम नहीं समझते कि इस मामले में कोई बहुत मतभेद हैं, किन शब्दों में व्यक्त किया जाए, यही सवाल है। अब कहा जा रहा है कि यह सवाल गुटनिरपेक्षता को स्वीकार नहीं करता, ये कैसे जानें और ये निर्का कैसे निकालें। जब मैं प्रतिपक्ष में था और यहां से नहीं, वहां से बोलता था तब भी मैं गुटनिरपेक्षता की नीति का समर्थन करता था। यह ठीक है कि अब विश्व बदल गया है और शीत युद्ध समाप्त हो गया है। अब दुनिया दो सैनिक खेमों में बंटी हुई नहीं है, मगर अब एक देश का प्रभुत्व, अन्य देशों को साथ आकर इसके बारे में गहराई से विचार करना पड़ेगा।

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Recently, one of the leading newspapers in USA, in its editorial said that there are two sides. One is the USA and the other is world opinion. ...*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: Shri Chatterjee, I am going to take up amendments.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : These are the two sides, one is the USA and the other is world opinion.

Sir, throughout the world, including the USA, huge public protests are being made. The definite policy of the other countries, like France, Germany and Russia is very well known. They are all opposing these threats to Iraq and the preparations for going to war. What is our stand on this? Do you not hail those protests which are being made all over the world?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, सोमनाथ जी और इनकी पार्टी के विचारों से हम लोग अवगत हैं, लेकिन वे दूर तक चले जाते हैं।

हम उतनी दूर तक जाने को तैयार नहीं हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : नहीं, इसमें जाना होगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम कोई मध्यम मार्ग खोजते हैं और उसमें से रास्ता निकालते हैं, यह पुरानी नीति है।â€¦(व्यवधान)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : How can it be maintaining *status quo*?...(*Interruptions*)You must say it in a forthright manner. You should express our views and concerns. In this situation, you cannot simply sit quiet and maintain *status quo.* The voice of one billion people is there.

श्री रूपचन्द पाल (हुगली) : इसमें कोई मध्यम मार्ग नहीं है।â€¦(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप चर्चा कर लें। नहीं, इसका सवाल नहीं है। मैं इस पर चर्चा करने के लिए तैयार हूं। बाहर जो लोग वहां हैं और उनको अगर वापस लाने की आवश्यकता पड़ी तो हम उसका इन्तजाम करेंगे। उनको खतरे में नहीं पड़ने देंगे, यह मैं आपको आश्वासन देना चाहता हूं। एक सवाल पर काफी बहस हुई है। केवल राट्रपति जी के अभिभाण को लेकर नहीं, सवालों के दौर में भी और वह रोजगार की स्थिति है। कितने रोजगार अब तक सृजित हुए हैं, कितने लोगों को काम मिला है, जब मैंने उस दिन कहा कि मेरी गणना और मेरी जानकारी के अनुसार 70 लाख लोगों को काम मिला है तो उसको चुनौती दी गई। मैं इस पर बहस करने के लिए तैयार हूं। रोजगार का मतलब सरकारी नौकरी नहीं है और यह संख्या 70 लाख की संख्या, अगर आप कहें तो मैं एक-एक आइटम पढ़कर दिखा सकता हूं कि किस क्षेत्र में कहां लोग काम पर लगे हैं। इसमें सरकार की योजनाएं भी हैं, गैरसरकारी जो विकास हुआ है, उसकी भी योजनाएं हैं।

श्री प्रियरंजन दासमुंशी: लेकिन आपने हर साल एक करोड़ रोजगार देने की बात कही थी।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : रामदास जी, बैठिये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : नौ लाख 60 हजार रोजगार के अवसर कंसट्रक्शंस में सृजित हुए हैं, व्यापार होटल आदि में 20.30 लाख, परिवहन एवं संचार में 7.5 लाख हुए हैं। कुछ कमी आई है, मगर उसके बावजूद हमारे पास जो आंकड़े हैं, वे इस बात की पुटि करते हैं कि 80 लाख के करीब, 70 लाख से ज्यादा रोजगारों का सृजन हुआ है, लेकिन मैं मानता हूंâ€¦(व्यवधान)

SHRIMATI SONIA GANDHI (AMETHI): Hon. Speaker, Sir, when we raised the question of *Berozgari,* that is, unemployment or under-employment, we were referring to the promise made by the Prime Minister, by the NDA, by the BJP coalition. Before they actually formed the Government, they promised during the elections that they would give one crore jobs per year. That was what we said on that day. It means that you should have given at least three-and-a-half crore jobs. You should have been able to give jobs to that extent....(*Interruptions*) If you have to fulfil your promise, you should have given three-and-a-crore jobs. That was our point made on that day.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, जब यह कहा गया था कि एक करोड़ लोगों को रोजगार देने का हम प्रयास करेंगे तो उसका अर्थ यह नहीं था कि एक करोड़ रोजगार सरकार लोगों को बुलाकर दे देगी। क्या आप लोगों की यह मंशा है?

SHRIMATI SONIA GANDHI : What does it mean? That is the promise made to the people....(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Listen to the Prime Minister. When your leader has put a question, let the Prime Minister reply.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अर्थव्यवस्था का विकास तेजी से करना और इस ढंग से करना कि रोजगार के अवसर उपलब्ध हों। आखिर हम चाहते हैं कि सर्विसेज में लोग लगें, यह तो स्वतंत्र रूप से लगने की व्यवस्था है। मेरे पास फिर वही आंकड़े आये हैं, जो मेरे कथन की पुटि करते हैं।

"The net job creation in 2002-2003 is accordingly nearly 84 lakhs. "

17.00 hrs.

Similarly, last year, nearly 79 lakh jobs were created and the year before that, more than 73 lakh jobs were created.

श्री रूपचन्द पाल : ये आंकड़ें मिलते कैसे हैं ? â€¦(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह मेरी समझ में नहीं आता कि अगर सरकार कहे कि लोगों को रोजगार मिल रहा है और आप कहें कि नहीं मिल रहा, इसमें कौन सी राजनीति है ? â€¦ (व्यवधान)यह कौन सा वैज्ञानिक दृटिकोण है ? आप सरकारी आंकड़ों को चुनौती नहीं दे सकते। â€¦ (व्यवधान)वैसे यह पर्याप्त नहीं है, इसे मैं मानता हूं। आप कहें कि एक करोड़ काफी नहीं है, उससे भी ज्यादा लोग बेरोजगार हो रहे हैं तो फिर हम आपसे चर्चा करने के लिए तैयार हैं। उसमें से रास्ता निकालने की बात सोचेंगे। â€¦ (व्यवधान)

श्री प्रकाश यशवंत अम्बेडकर (अकोला) : यह संख्या कम नहीं हुई है बल्कि वह उतनी की उतनी ही है। â€¦ (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मुझे याद है, रोजगार का सवाल इस संसद के जीवन में बार-बार उठता रहा है। व्यक्तिगत आमदनी कितनी होनी चाहिए लेकिन सभी इस बात को स्वीकार करेंगे कि गरीबी की रेखा के नीचे जिंदगी बिताने वालों की तादाद घटी है। ये सरकारी आंकड़े हैं। â€¦ (व्यवधान)अब आप इसे भी चुनौती दे रहे हैं। ये जो आंकड़े इकट्ठे करने वाली संस्था है, वह एक स्वतंत्र संस्था है। वह किसी दबाव में आकर काम नहीं करती। â€¦ (व्यवधान)

श्री प्रकाश यशवंत अम्बेडकर : लेबर मिनिस्ट्री उसे मानने के लिए तैयार नहीं है। â€¦ (व्यवधान)

श्री रामदास आठवले : देश में गरीबी बढ़ रही है।â€¦ (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मुझे एक मुद्दा और उठाना है। जो नेता, प्रतिपक्ष की बात को लेकर है। "The Government is using terrorism as a pretext to polarise our society."

यह वाक्य बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है। â€¦ (व्यवधान)राजनीति करने के सौ रास्ते खुले हुए हैं। अंत में जनता फैसला करेगी, जैसा हिमाचल में किया, और उससे पहले गुजरात में किया था। â€¦ (व्यवधान)

कहां देश के बंटवारे की बात हो रही है, कहां देश को विघटित करने की साजिश हो रही है, कौन यह कर रहा है ?...(व्यवधान) यह गलत है। आप उनको बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं इसीलिए ऐसा लगता है कि संकट बहुत बड़ा है। जो भी परिस्थिति हो, सरकार उसका सामना करने में समर्थ है क्योंकि जनता का सहयोग है। कभी भी देश सर्वधर्म समभाव का रास्ता नहीं छोड़ेगा। अब सोनिया जी को इस पर भी आपत्ति है कि सेक्युलरिज्म के बारे में एक वाक्य कह दिया। क्या एक वाक्य कहना काफी नहीं होता ? जब पहली बार संविधान बना था तो उसमें सेक्युलर शब्द लिखने के लिए भी नहीं था। ...(व्यवधान)

श्री एस.जयपाल रेड्डी : उस समय जरूरत नहीं थी। â€¦ (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हां जरूरत नहीं थी इसलिए हम जो कर रहे हैं, जो बोल रहे हैं, उसमें जरूरत नहीं है। हम सेक्युलरिज्म का ढोल पीटें, मोर्चा बनायें और सबको इकट्ठा करें, हमारे मित्र दलो को तोड़ें और घर में फूट डालें, यह ठीक नहीं है। â€¦ (व्यवधान)इसमें आतंकवाद को लाना ठीक नहीं है क्योंकि यह अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में हमारी स्थिति को बिगाड़ेगा। दुनिया वाले कहेंगे कि आपके यहां कोई आतंकवाद नहीं है, यह तो आपस की लड़ाई है जिसको आतंकवाद का रूप दे रहे हैं। क्या हम चाहते हैं कि यह कहा जाये। â€¦ (व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Mr. Speaker, Sir, we have supported them on all issues relating to terrorism, except POTA which is being misused now and everybody admits that.

MR. SPEAKER: Shri Somnath Chatterjee, he is not yielding. Please take your seat.

श्री रतन लाल कटारिया (अम्बाला) : अध्यक्ष महोदय, आप रनिंग कमेंट्री रोकिये। â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने उसे रोक दिया है।

...(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि मैंने काफी मुद्दों को स्पर्श किया है और मैं चाहूंगा कि राट्रपति महोदय के लिए हम सब लोगों का यह धन्यवाद प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो।

MR. SPEAKER: The Prime Minister"s Statement is taken as laid on the Table of the House.

STATEMENT BY PRIME MINISTER

RE: VISIT TO KUALA LUMPUR (MALAYSIA) FOR

13TH NAM SUMMIT – 24-25 FEBRUARY 2003

* THE PRIME MINISTER (SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE) :

STATEMENT BY THE PRIME MINISTER OF INDIA

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE

AT THE XIII NAM SUMMIT

(Kuala Lumpur; February 24, 2003)

XIII NAM SUMMIT ; KL DECLARACTION

KUALA LUMPUR DECLARATION ON CONTINUING THE

REVITALISATION OF THE NON-ALIGNED MOVEMENT

*Laid on the Table of the House alongwith his statement made at the XIII NAM Summit and the declarations made at the summit

(Placed in Library, See No. LT. 7068/2003)

MR. SPEAKER: A number of amendments have been moved by Members to the Motion of Thanks. Shall I put all the amendments together to the vote of the House?

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. SPEAKER: I shall now put all the amendments together to the vote of the House.

The amendments were put and negatived.

MR. SPEAKER: I shall now put the main Motion to the vote of the House.

The question is:

"That an Address be presented to the President in the following terms:-

'That the Members of Lok Sabha assembled in this Session are deeply grateful to the President for the Address which he has been pleased to deliver to both Houses of Parliament assembled together on February 17, 2003.' "

The motion was adopted.

MR. SPEAKER: The House stands adjourned to meet tomorrow, 4th March, 2003, at 11.00 a.m.

17.06 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock

on Tuesday, March 4, 2003/Phalguna 13, 1924 (Saka).